Hindi Murli Quiz 30-08-2015

Q.1) **Q. आज बाप-दादा ने परमात्म-ज्ञान के प्रत्यक्ष स्वरूप अर्थात प्रैक्टिकल डबल रूप बच्चों में जो दो बातें देखीं, उनका सही-सही चयन करें ----**

- **A.** माया प्रूफ
- **B.** श्रेष्ठ जीवन का प्रूफ
- **C.** तपस्वी रूप
- **D.** अलंकारी रूप

Q.2) **Q. " आजकल साइन्स के युग में मनुष्य हर बात के प्रत्यक्ष प्रमाण व प्रूफ के द्वारा ही समझना चाहते हैं। सुनने-सुनाने से निश्चय नहीं करते। परमात्म ज्ञान को निश्चय करने के लिए प्रत्यक्ष प्रूफ देखना चाहते हैं। प्रत्यक्ष प्रूफ है आप सबका जीवन। ऐसी असम्भव से सम्भव होने वाली बातें परमात्म-ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। सबसे बड़ी असम्भव सम्भव होने वाली बात प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना अर्थात प्रवृत्ति में रहते इस देह और देह की दुनिया के सम्बन्धों से परे रहना।"**

- **A.** True
- **B.** False

Q.3) **Q. निम्नलिखित वाक्यों में से केवल सही वाक्य चयन कर 'पर-वृत्ति' को स्पष्ट करें—**

- **A.** पुरानी वृत्ति से पर रहना अर्थात परे रहना, न्यारा रहना।
- **B.** पर-वृत्ति अर्थात देखते देह को हैं लेकिन वृत्ति में आत्मा रूप है।
- **C.** सम्पर्क में लौकिक सम्बन्ध में आते हुए भी भाई-भाई के सम्बन्ध में रहना।
- **D.** इस पुराने शरीर की ऑखों से पुरानी दुनिया की वस्तुओं को देखते हुए न देखना।
- **E.** सम्पूर्ण पवित्र जीवन में चलना ।

Q.4) **Q. जो बातें आत्म ज्ञानी महान आत्माएं भी असम्भव अथवा मुश्किल समझती हैं लेकिन परमात्म ज्ञानी अति सहज बात अनुभव करते हैं उनको इस सुन्दर मैचिंग एक्सरसाइज में रिक्त स्थानों को भरके स्पष्ट करें -----**

	Choice		Match
A	अब तक भक्त माला के पहले, दूसरे दाने भी ----------को बड़ा मुश्किल समझते।	1	अनुभव ।
B	वे एक सेकेण्ड के ---------- को महान प्राप्ति समझते हैं।	2	अपना ।
C	साक्षात बाप ---------बन जाएं व --------- बनादे, इसको वे असम्भव समझते हैं।	3	परमात्म-मिलन ।
D	वे परमात्मा से मिलना मुश्किल समझते हैं और परमात्म ज्ञानी बच्चे मिलना ----------समझते हैं ।	4	साक्षात्कार ।
E	आत्म ज्ञानी महान आत्मायें आत्मा भाई-भाई हैं, परमात्मा बाप नहीं है इसलिए अविनाशी वर्सा का ----------नहीं पा सकेंगे।	5	अधिकार ।

Q.5) **Q. " बाप को प्रत्यक्ष करने का साधन है डबल प्रूफ बनना। तो चेक करो यह प्रत्यक्ष प्रमाण प्युरिटी और प्राप्ति दोनों ही अविनाशी हैं। अल्पज्ञ आत्मा अल्पकाल की प्राप्ति कराती है। अविनाशी बाप अविनाशी प्राप्ति कराते हैं। पुरूषार्थ और प्रत्यक्ष प्रारब्ध साथ-साथ हैं, यही परमात्म प्राप्ति की विशेषता है। और ही सतयुगी प्रारब्ध से भी विशेष बाप की प्राप्ति की प्रारब्ध अभी है। अब की प्रारब्ध है – परमात्मा के साथ डायरेक्ट सर्व सम्बन्ध। भविष्य प्रारब्ध है देव आत्माओं से सम्बन्ध। प्रारब्धी रूप को सदा सामने रखो। प्रारब्ध देख कर सहज ही चढ़ती कला का अनुभव करेंगे।"**

A. True
B. False

Q.6) **Q. केवल सही वाक्य ही चयन करें --**

A. संगम युग की विशेषताओं का सदा स्मृति स्वरूप बनो तो विशेष आत्मा हो ही जायेंगे।
B. चलते-चलते कई बच्चों को मार्ग मुश्किल अनुभव होता है क्योंकि अपने को सिर्फ पुरुषार्थी समझते हैं, प्रारब्ध को भूल जाते हैं।
C. "पाना था सो पा लिया" यह गीत गाना भूल जाते हो जिससे अनेक प्रकार के घुटके व झुटके खाते हो।
D. प्राप्ति की ख़ुशी में गाते रहो, नाचते रहो तो ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करेंगे।
E. प्रत्यक्ष करने की विधि है कि चलते-फिरते प्रत्यक्ष प्रमाण रूपी चेतन्य संग्रहालयरूप बन जाओ।

Q.7) **Q. शब्दों / वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही आपस में मिलाएं ---**

	Choice		Match
A	इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है,	1	नर से नारायण बनना व लक्ष्मी बनना।
B	लक्ष्मी स्वरूप अर्थात धन-देवी और,	2	भण्डारा खुला होगा तो चोर नहीं आयेगा।
C	जब से ब्राह्मण बने हो तब से जन्म-सिद्ध अधिकार में क्या मिला?	3	ज्ञान का, शक्तियों का खज़ाना मिला ।
D	रोज़ अपने मिले हुए खजानों को देखो और यूज़ करो,	4	नारायण स्वरूप अर्थात राज्य-अधिकारी।
E	महादानी अर्थात सदा भण्डारा चलता रहे वा खुला रहे,	5	स्व के प्रति भी, औरों के प्रति भी।

Q.8) **Q. फुल मार्क्स लेने के लिए केवल सही वाक्य ही चयन करें ---**

A. तीव्र पुरुषार्थी बीती को चिन्तन में लाकर कभी समय, शक्ति, संकल्प वेस्ट नही करते ।
B. संगम युग की दो घड़ी अर्थात दो सेकेण्ड भी वेस्ट किये तो अनेक वर्ष वेस्ट कर दिये।
C. जो फुल स्टॉप लगाना जानता है वह सदा फुल रहेगा।
D. सदा हर आत्मा के प्रति शुभभावना रखो। शुभभावना सफलता को प्राप्त करायेगी।
E. साइन्स वाले रेत में खेती पैदा कर सकते हैं परन्तु साइलेन्स वाले धरती का परिवर्तन नहीं कर सकते।

Q.9) **Q."आजकल जो महान आत्मायें कहलाती हैं उन्हों के नाम अखण्डानंद आदि रखते हैं लेकिन सबमें अखण्ड स्वरूप तो आप हो – आनंद में भी अखण्ड, सुख में भी अखण्ड---, सिर्फ संगदोष में न आओ, दूसरे के अवगुणों को देखते, सुनते डोंट केयर करो तो इस विशेषता से अखण्ड योगी बन जायेंगे। जो अखण्ड योगी हैं वही अखण्ड पूज्य बनते हैं। तो आप ऐसी महान आत्मायें हो जो आधा कल्प स्वयं पूज्य स्वरूप में रहती हो और आधा कल्प आप के जड़ चित्रों का पूजन होता है।"**

A. True
B. False

Q.10) **Q. " दिव्य बुद्धि ही ---------- शक्ति का आधार है।"**

निम्नलिखित विकल्पों में से एक सबसे सटीक शब्द से उपरोक्त रिक्त स्थान भरें।

A. साइलेन्स की,
B. निर्णय,
C. परख,
D. सहन